International Journal of Childhood and Development Disorders

E-ISSN: 2710-3943
P-ISSN: 2710-3935
IJCDD 2023; 4(1): 24-28
© 2023 IJSA
https://www.rehabilitationjournals.com/childhood-development-disorders/
Received: 01-01-2023
Accepted: 05-02-2023

डॉ. रचना त्रिवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्षा, शिक्षाशास्त्र विभाग, नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना डी0 एस0 एन0 कॉलेज, उन्नाव, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. रचना त्रिवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, विभागाध्यक्षा, शिक्षाशास्त्र विभाग, नोडल अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना डी0 एस0 एन0 कॉलेज, उन्नाव, उत्तर प्रदेश, भारत

छात्रों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर प्रभाव

डॉ. रचना त्रिवेदी

सारांश
राष्ट्र की समृद्धि एवं गौरव का आधार शिक्षा है, जो सतत एवं सामंजस्यपूर्ण विकास द्वारा हमारी क्षमताओं को उत्कृष्ट बनाती है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में नैतिक मूल्यों का सदैव महत्व रहा है। समय की मांग है कि बच्चों में समायोजन की क्षमता विकसित की जाए, साथ ही यह प्रयास भी जारी रखा जाए कि विद्यार्थियों का आचरण इन मूल्यों के अनुरूप आत्म-अनुशासित हो। शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करती है। विद्यार्थियों के ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि होती है, जिससे एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

कूटशब्द : शिक्षा, आत्म-अनुशासित, समाज का निर्माण, समायोजन क्षमता

प्रस्तावना

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में सफल समायोजन की क्षमता पैदा की जा सकती है। शिक्षा व्यक्ति में दो प्रकार से समाज एवं वातावरण के साथ सामंजस्य बिठाने की क्षमता उत्पन्न करने का कार्य करती है। सबसे पहले शिक्षा व्यक्ति को ऐसा विवेक, ऐसी बुद्धि देती है जिससे वह घटनाओं का व्यावहारिक विश्लेषण करके परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार कर सके और दूसरी ओर यह व्यक्ति को इतना कुशल बनाती है कि वह विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सके।

समाज द्वारा निर्धारित नियमों और सिद्धांतों का पालन करना ही नैतिकता है और इन नियमों और सिद्धांतों के अनुसार आचरण करने की शक्ति को चरित्र कहा जाता है। यही कारण है कि सभी समाज शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के नैतिक और चरित्र को विकसित करने का प्रयास करते हैं। शिक्षा का मुख्य कार्य व्यक्ति का नैतिक एवं चारित्रिक विकास करना है।

प्रत्येक बच्चे में व्यक्तिगत भिन्नता होती है। उनके पास कुछ शक्ति और क्षमताएं हैं। यदि इन शक्तियों एवं योग्यताओं की दिशा समाज की ओर उन्मुख हो तो वह बच्चा समाज एवं देश के लिए प्रेरक एवं प्रगति का कारक बनता है। अत: विभिन्न विद्यालयों में पढ़ने वाले इन विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता का विभिन्न परीक्षणों के माध्यम से मूल्यांकन करके बच्चे के व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन लाया जा सकता है।

छात्रों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर प्रभाव महत्वपूर्ण हो सकता है। नैतिक मूल्य किसी व्यक्ति के विश्वास, दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब छात्रों की बात आती है, तो उनके नैतिक मूल्य शिक्षा, सामाजिक संपर्क और व्यक्तिगत विकास सहित जीवन के विभिन्न पहलुओं में अनुकूलन और समायोजन करने की उनकी क्षमता को बहुत प्रभावित कर सकते हैं। यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे छात्रों के नैतिक मूल्य उनकी समायोजन क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं:

1. **निर्णय लेना:** नैतिक मूल्य छात्रों को नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन करते हैं। मजबूत नैतिक मूल्यों वाले छात्र ऐसे विकल्प चुनने की अधिक संभावना रखते हैं जो उनके सिद्धांतों और विश्वासों के अनुरूप हों। इससे उन्हें कठिन परिस्थितियों से निपटने और ऐसे निर्णय लेने में मदद मिल सकती है जो उनके दीर्घकालिक लक्ष्यों और व्यक्तिगत अखंडता के अनुरूप हों।
2. **लचीलापन:** नैतिक मूल्य लचीलापन और आंतरिक शक्ति की नींव प्रदान करते हैं। मजबूत नैतिक क्षमता वाले छात्र अक्सर चुनौतियों और असफलताओं का सामना करने में अधिक लचीले होते हैं। वे तनाव से निपटने, असफलताओं को संभालने और कठिन समय में दृढ़ रहने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं, जिससे नए वातावरण और परिस्थितियों में समायोजित होने की उनकी क्षमता बढ़ जाती है।
3. **सामाजिक संपर्क:** छात्रों के नैतिक मूल्य इस बात को प्रभावित करते हैं कि वे दूसरों के साथ कैसे जुड़ते हैं। सम्मान, सहानुभूति और निष्पक्षता जैसे नैतिक मूल्य सकारात्मक सामाजिक संपर्क में योगदान करते हैं। जो छात्र इन गुणों को महत्व देते हैं, उनके स्वस्थ संबंध बनाने, संघर्षों को प्रभावी ढंग से हल करने, सकारात्मक और समावेशी सीखने के माहौल में योगदान करने की अधिक संभावना होती है। ये कौशल नई सामाजिक सेटिंग्स को अपनाने, साथियों और शिक्षकों के साथ संबंध बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
4. **व्यक्तिगत विकास:** नैतिक मूल्य व्यक्तिगत विकास और चरित्र विकास में योगदान करते हैं। जो छात्र सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं उनमें स्वयं और उद्देश्य की मजबूत भावना होती है। उनमें सार्थक लक्ष्य निर्धारित करने और हासिल करने, आत्म-अनुशासन विकसित करने और एक मजबूत कार्य नीति प्रदर्शित करने की अधिक संभावना है। ये गुण शैक्षणिक और व्यक्तिगत चुनौतियों की माँगों के अनुरूप ढलने के लिए आवश्यक हैं।
5. **नैतिक विचार:** छात्रों के नैतिक मूल्य उनके नैतिक विचारों और व्यवहार को आकार देते हैं। इससे सामाजिक मानदंडों और अपेक्षाओं के अनुरूप ढलने की उनकी क्षमता प्रभावित होती है। ठोस नैतिक आधार वाले छात्रों के नैतिक आचरण में संलग्न होने, जिम्मेदार विकल्प चुनने और अपने समुदायों में सकारात्मक योगदान देने की अधिक संभावना होती है। यह अनुकूलनशीलता विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को नेविगेट करने में महत्वपूर्ण है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि छात्रों के नैतिक मूल्य परिवार, संस्कृति, शिक्षा और व्यक्तिगत अनुभवों सहित विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हैं। जबकि नैतिक मूल्य छात्रों को समायोजित करने में मदद करने में एक सकारात्मक शक्ति हो सकते हैं, ऐसे वातावरण को बढ़ावा देना भी महत्वपूर्ण है जो खुले दिमाग, आलोचनात्मक सोच और विविध दृष्टिकोणों के लिए सम्मान को प्रोत्साहित करता है। यह छात्रों को अपने नैतिक सिद्धांतों के प्रति सच्चे रहते हुए एक जटिल और हमेशा बदलती दुनिया में अनुकूलन और समायोजन करने की अनुमति देता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की तुलना करना।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की उच्च प्राथमिक स्तर पर समायोजन क्षमता पर उनके नैतिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की उच्च प्राथमिक स्तर पर समायोजन क्षमता पर उनके नैतिक मूल्यों के प्रभाव की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ - वर्तमान शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ बनाई गईं:

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में महत्वपूर्ण अंतर पाया जायेगा।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर पाया जायेगा।

3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी और ग्रामीण छात्रों के नैतिक मूल्यों और समायोजनशीलता के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।
4. शहरी और ग्रामीण छात्रों के नैतिक मूल्यों और उच्च प्राथमिक स्तर पर उनकी समायोजन क्षमता के बीच संबंध में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाएगा। शोध प्रक्रिया- प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श (Sample)

जनपद उन्नाव के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विभिन्न विद्यालयों से विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन इस प्रकार किया गया –

क्रम	स्कूल के नाम	प्रकार	लड़के	लड़कियाँ	कुल
1.	सरस्वती विद्या मंदिर, ए बी नगर, डी एस एन कॉलेज रोड, उन्नाव	शहरी	25	25	50
2.	डी वी डी टी इंटर कॉलेज, ए बी नगर, उन्नाव	शहरी	25	25	50
3.	उच्च प्राथमिक विद्यालय, गलगलहा, उन्नाव	ग्रामीण	25	25	50
4	ओ पी जी डी इंटर कॉलेज उन्नाव	ग्रामीण	25	25	50
कुल			100	100	100

शोध प्रक्रिया (Research Process) - प्रयोगात्मक विधि

आंकड़ों के संग्रहण के लिए निम्नलिखित प्रमाणित उपकरण (प्रश्नावली) का उपयोग किया गया है -

1. **नैतिक मूल्य का पैमाना:** डॉ. श्रीमती. प्रतिभा देवांगन, डॉ. बी.जी. सिंह एवं डॉ. पी.के. श्रीवास्तव द्वारा विकसित नैतिक मूल्य पैमाना इस परीक्षण में 45 नैतिक मूल्य थे, जिनमें से 10 मूल्यों को परीक्षण के लिए लिया गया।
2. **एडजस्टेबिलिटी स्केल:** "ए.के.पी. सिन्हा और आर.पी. सिंह एडजस्टमेंट इन्वेंटरी फॉर स्कूल स्टूडेंट्स (एआईएसएस) हिंदी' का उपयोग किया गया है। इसमें कुल 60 प्रश्न हैं. इस परीक्षा में तीन भाग हैं, प्रत्येक भाग में बीस प्रश्न हैं।

उपकरण (Tools)

प्रस्तुत लघु शोध में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजन क्षमता का परीक्षण किया गया तथा अंकों को व्यवस्थित कर उन्हें सारणीबद्ध किया गया।

परिकल्पना क्रमांक- 01- ''उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में महत्वपूर्ण अंतर पाया जायेगा।''

तालिका 1: शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य परीक्षण के अंकों का सारणीकरण

क्रम	नैतिक मूल्य		छात्रों की संख्या	मानक	विचलन	क्रांतिक अनुपात
1.	शहरी छात्र	लड़के	50	36.45	5.6	2.36
		लड़कियाँ	50			
2.	ग्रामीण छात्र	लड़के	50	34.45	6.33	
		लड़कियाँ	50			

स्पष्टीकरण- शहरी क्षेत्र के 100 एवं ग्रामीण क्षेत्र के 100 विद्यार्थियों पर नैतिक मूल्य परीक्षण कराया गया है। शहरी छात्रों के नैतिक मूल्यों का औसत मूल्य 36.45 और मानक विचलन 5.6 था और ग्रामीण छात्रों का औसत मूल्य 34.45 और मानक विचलन 6.33 था।

198 डीएफ (स्वतंत्रता की डिग्री) पर महत्व के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण अनुपात का मूल्य 5% आत्मविश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि छात्रों से प्राप्त महत्वपूर्ण अनुपात का मूल्य 2.36 है, जो महत्व के लिए आवश्यक मूल्य से अधिक है 5% आत्मविश्वास. अतः शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में महत्त्वपूर्ण अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना संख्या-01 प्रमाणित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02- "उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी और ग्रामीण छात्रों की समायोजन क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाएगा।"

तालिका 2: शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता परीक्षण के अंकों का सारणीकरण

SN	समायोजन क्षमता के अंक		छात्रों की संख्या	मानक	विचलन	क्रांतिक अनुपात
1.	शहरी छात्र	लड़के	50	36.45	6.88	1.98
		लड़कियाँ	50			
2.	ग्रामीण छात्र	लड़के	50	34.45	5.31	
		लड़कियाँ	50			

स्पष्टीकरण- शहरी क्षेत्र के 100 और ग्रामीण क्षेत्र के 100 छात्रों पर समायोजन क्षमता परीक्षण प्रशासित किया गया है। शहरी विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का औसत मान 17.2 तथा मानक विचलन 6.88 तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता का औसत मान 15.5 तथा मानक विचलन 5.31 पाया गया।
1.98 df स्वतंत्रता की डिग्री पर महत्व के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण अनुपात का मूल्य 5% आत्मविश्वास स्तर पर 1.97 है, जबकि छात्रों से प्राप्त महत्वपूर्ण अनुपात का मूल्य 1.98 है जो 5% पर महत्व के लिए आवश्यक मूल्य से आत्मविश्वासअधिक है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना संख्या-02 प्रमाणित होती है।

परिकल्पना संख्या 03 - "उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजनशीलता के बीच एक सकारात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।"

तालिका 3: छात्रों के नैतिक मूल्यों और समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध के लिए परीक्षण के अंकों का सारणीकरण

SN	छात्र		छात्रों की संख्या	सहसंबंध गुणांक
1.	शहरी छात्र	लड़के	50	0.82
		लड़कियाँ	50	
2.	ग्रामीण छात्र	लड़के	50	0.60
		लड़कियाँ	50	

स्पष्टीकरण- शहरी छात्रों के नैतिक मूल्यों और उनकी समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध गुणांक 0.82 पाया गया। इसलिए, शहरी छात्रों के नैतिक मूल्यों और समायोजन क्षमता के बीच बहुत अधिक सकारात्मक सहसंबंध है।
ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं उनकी समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध गुणांक 0.60 पाया गया। इसलिए, ग्रामीण छात्रों के नैतिक मूल्यों और समायोजन क्षमता के बीच एक मामूली सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अतः परिकल्पना संख्या-03 प्रमाणित होती है।

परिकल्पना संख्या-04- "उच्च प्राथमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों एवं समायोजनशीलता के बीच सहसंबंध में महत्वपूर्ण अंतर पाया जाएगा।"

तालिका 4: शहरी और ग्रामीण छात्रों के नैतिक मूल्यों और उनकी समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में अंतर के महत्व का सारणीबद्धीकरण

SN	छात्र	सहसंबंध गुणांक		5% महत्व
		पियर्सन r	फिशर z	*dz*
1.	शहरी छात्र	0.82	1.16	
2.	ग्रामीण छात्र	0.62	0.73	2.99

व्याख्या- शहरी और ग्रामीण छात्रों के नैतिक मूल्यों और उनकी समायोजन क्षमता के बीच संबंध के लिए अंतर का महत्व 2.99 पाया गया, जो 5% आत्मविश्वास स्तर पर अंतर के महत्वपूर्ण होने के लिए आवश्यक 0.138 से अधिक है। अत: शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एवं उनके समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में एक महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना संख्या-04 प्रमाणित होती है।

निष्कर्ष

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में अंतर पाया गया।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में अंतर पाया गया।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी छात्रों के नैतिक मूल्यों और समायोजन क्षमता के बीच बहुत उच्च सकारात्मक सहसंबंध और ग्रामीण छात्रों के नैतिक मूल्यों और समायोजन क्षमता के बीच मध्यम सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अत: यह कहा जा सकता है कि जिन विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य का स्तर अच्छा होता है, उनकी समायोजन क्षमता भी उच्च कोटि की होती है।
4. शहरी और ग्रामीण छात्रों के नैतिक मूल्यों और उनकी समायोजन क्षमता के बीच सहसंबंध में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

सुझाव

1. शिक्षकों को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करना चाहिए और छात्रों को उनकी समस्याओं के समाधान में सार्थक पहल करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। समस्या का समाधान होने के बाद ही छात्र खुद को समायोजित कर पाएंगे।
2. विद्यालय में पढ़ाई के अलावा अन्य गतिविधियों के आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए ठोस नियम बनाये जाने चाहिए।
3. नैतिक मूल्यों के विकास के लिए इससे संबंधित सामग्री को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।
4. शिक्षक को स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए विद्यार्थियों के सामने आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

सन्दर्भ

1. जयसवाल, सीताराम, समायोजन विज्ञान 1999, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा
2. कपिल, डॉ. एच.के., रिसर्च मेथड्स (एप्लाइड साइंसेज में) 1989, हर प्रकाश भार्गव, आगरा
3. माथुर, एस.एफ., शिक्षा मनोविज्ञान 1991, शिक्षा विभाग, आर.ई.आई. ट्रेनिंग कॉलेज दयालबाग, आगरा पांडे, डॉ. राम शकल, पर्सपेक्टिव्स ऑफ वैल्यू एजुकेशन 1982, हर प्रकाश भार्गव, आगरा
4. सरीन डॉ. शशिकला, एजुकेशनल रिसर्च मेथड्स 1998, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा-2
5. वशिष्ठ, बिजेंद्र कुमार, अर्ली फ्रेमवर्क ऑफ पेडागॉजी 1989, आर. लाल बुक डिपो मेरठ